आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 368 ARYA SABHA MAURITIUS *4th July to 15th July 2017*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

जीवन के अंतिम लक्ष्य

LE BUT ULTIME DE LA VIE

ओ३म् अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्याया॑ रताः ।।

यजुर्वेद ४०/१२

Om ! Andhantamah pra vishanti ye avidyāmupāsate.
Tato bhuya iva te tamo ya u vidyāyām ratāh.

Yajur Véda 40/12

Glossaire / Shabdārtha

ye – celui qui / l'homme qui

avidyām upāsaté – (i) fait l'acquisition de la connaissance du monde matériel seulement (aparā vidyā / bhautika vidyā) ; (ii) passe à l'action / accomplit ses devoirs avec dévotion (karma) ; et (iii) dans l'ignorance prend la nature et toutes les choses inertes (sans vie) et les autres créatures pour Dieu et les adore.

andhan tamah pra vishanti – se trouvera dans l'obscurité, c'est-à-dire, dans l'ignorance du côté spirituel. De ce fait, il commettra des péchés graves et n'atteindra jamais la félicité éternelle (Moksha) qui est le but ultime de la vie humaine.

ya u – et celui

vidyāyām ratāh – qui ne s'adonne qu'à la spiritualité (parā vidyā / brahma vidyā) ou reste absorbé que dans la dévotion spirituelle, sans l'acquisition de la connaissance du monde matériel et ignore ses devoirs envers sa famille, la société et son pays.

tattah bhuya iva tamah – s'enfoncera ou se perdra dans une obscurité plus dense. Un tel individu vit de l'aumône et devient un fardeau pour la société et le pays. Il n'aura pas la bénédiction du Seigneur, n'atteindra jamais du bonheur suprême ou la libération de son âme du cycle de la vie et de la mort (paramānand / moksha).

Interprétation / Anushilan

Le thème principal de ce verset tourne autour de 'Vidyā' et 'Avidyā'.

Dans le langage courant 'Vidyā' signifie le savoir / la connaissance, et 'Avidyā' l'ignorance qui n'est jamais bénéfique à l'homme.

Or, dans le contexte de ce verset 'Avidyā' aide l'homme à vaincre la mort, de ce fait, c'est bien évident que ce mot a une signification tout à fait différente. Et nous tenons à apporter un peu plus de précision à propos de ces deux mots afin d'éviter toute confusion dans l'esprit de nos lecteurs.

Vidyā

L'Être Suprême, est dénommé 'Ātmā' et 'Brahma'. Pour le connaitre et atteindre sa bénédiction il nous faut étudier ce sujet et mettre en pratique les recommandations du verset, telles que la croyance en un seul Dieu et son adoration par le dévouement envers lui, par les prières, la méditation, le yoga et autres actions relatives (upāsnā). Le nom de cette étude est mentionné dans ce verset par le mot 'Vidyā' aussi appelé 'ātma vidyā', 'adhyātma vidyā', 'brahma vidyā' / 'parā vidyā' par les sages.

Il faut que l'on sache que Dieu existe comme une entité à part entière et unique dans son genre (un seul Dieu). Il est tout-puissant, le Maître Suprême et l'âme de l'univers entre autres. Lui seul est digne d'adoration et nul autre.

Les choses inertes (sans vie) de la nature et les autres créatures du monde ne doivent pas être adorées à sa place, car elles sont mises, par le Seigneur, à la disposition de l'homme pour qu'il puisse s'en servir avec discrétion, pourvoir à tous ses besoins et vivre heureux tout en accomplissant ses devoirs envers sa famille, la société, son pays et envers Dieu.

Celui qui, délibérément ou par ignorance, fait une mauvaise interprétation des mots et des versets de nos écritures saintes, commet des péchés et induit les autres en erreur. Il développe l'orgueil, ne respecte pas la vérité, fait fi des enseignements des Védas, croit seulement dans le monde matériel et se dévoue à l'adoration des idoles (les choses inertes).

Une telle personne, au lieu d'aider les pauvres, les handicapés et ceux dans le besoin, va déposer des offrandes (gâteaux, fruits, aliments, vêtements, bijoux et de l'argent) devant les idoles qui ne les consommeront pas et ne les serviront jamais. Il y a aussi d'autres personnes qui font des donations à des personnes qui ne les méritent pas.

Ces personnes ne connaîtront pas le bonheur éternel. Elles se trouveront tôt ou tard dans les ténèbres de l'ignorance où il n'y aura que la souffrance.

Il y a aussi d'autres personnes qui ne se consacrent qu'à la spiritualité dans leur vie, c'est-à-dire, à l'acquisition de 'Vidyā' seulement, sans accomplir leur devoir envers leurs familles, la société et leur pays. Elles ne travaillent pas et ne vivent que de l'aumône. Elles deviennent un fardeau pour la société. En conséquence c'est le pays qui doit prendre charge de ces personnes pour éviter un problème social.

Elles aussi n'auront pas la bénédiction du Seigneur avec 'Vidyā' seulement et ne mériteront pas l'émancipation de leur âme (moksha). .... *à suivre ...... page 4*

N. Ghoorah

सम्पादकीय

मानव और वेद

संसार के समस्त जीवधारियों में मानव-जाति को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि उसमें बुद्धि और विवेक-शक्ति होती है। मनन एवं चिन्तन करने की क्षमता होती है। वह दक्षता और कार्यकुशलता से परिपूर्ण होता है। जीवन पर्यन्त कर्मशील बनकर अपने और अन्यों के हित में समर्पित रहता है। अपनी बौद्धिक योग्यता से वह विद्याएँ ग्रहण करके बुद्धिजीवी कहलाता है।

मानव और वेद का अटूट सम्बन्ध सृष्टि की उत्पति काल से है। सृष्टि के आरम्भिक काल ही में ईश्वरीय वाणी का श्रवण चार महात्माओं ने किया था। अग्नि ऋषि ने जो सत्यविद्याएँ श्रवण की थीं, उसे ऋग्वेद नाम दिया गया था, इसी प्रकार वायु ऋषि ने यजुर्वेद, आदित्य ऋषि ने सामवेद और अंगिरा ऋषि ने अथर्ववेद का श्रवण किया था। वेद शब्द की रचना 'विद' धातु से हुई है, विद का तात्पर्य 'ज्ञान' है। चारों वेदों में सत्यज्ञान का भण्डार है, जो मनुष्य जाति के लिए मूल रूप से अति आवश्यक है।

आर्यसमाज का तीसरा नियम यह दर्शाता है कि – वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। प्रत्येक प्राणी का यह कर्तव्य है कि वह चार वेदों का अध्ययन करें, अपनी तीव्र बुद्धि द्वारा वैदिक विद्याओं को समझें और अपना जीवन वेदों के आधार पर व्यतीत करें। पठन-पाठन तथा श्रवण के माध्यम से अन्यों को वेद ज्ञाता बनाते रहें, तभी हम अपने आर्यत्व का धर्म निभाने में सफल होंगे ।

ओ३म् सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते। *(ऋग्वेद) इस मन्त्र का अर्थ है – ऐ ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यो ! तुम सब आपस में मिलकर चलो, मिलकर रहो, प्रेम से बातचीत करो, तुम सब एक दूसरे से मन मिलाकर सत्यज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार पूर्व में विद्वान् व्यक्ति मिलकर एक दसूरे के सहयोग से अनेक प्रकार की विद्याएँ ग्रहण करके ऐश्वर्य और उन्नति प्राप्त करते थे, वैसे ही तुम भी प्राप्त करो। वेदानुकूल अगर हम जीने की आदत्त डालेंगे और दूसरों में वेद-विद्या बाँटकर उन्हें जीने के अधिकारी बनाने का पूरा प्रयत्न करेंगे तो वेदमाता हमें आयु, बल, सन्तति, पशु, कीर्ति, धन, मेधा, विद्यादि सब कुछ देकर हमें भौतिक और आध्यात्मिक सुख, आनंद और शान्ति देकर मुक्ति का मार्ग प्रदान करेगी।*

मानव और वेद का नाता जीवन भर का होता है वेदाभ्यास से हम उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं और वेद को तिरस्कृत करके हम अवनति को प्राप्त करते हैं। आज बहुत से अज्ञानी भौतिक भोग विलास में फंसकर कुमार्ग में पड़े हुए हैं। उन अबोधों के तनावपूर्ण जीवन में चैन और शान्ति नहीं, ऐसी गम्भीर परिस्थिति में ईश्वर की सत्य और शास्वत वेद-वाणी ही रक्षाकर सकती है। यज्ञ-महायज्ञों के प्रभाव से उनके गुण-कर्म पावन हो सकते हैं।

श्रावणी महोत्सव एक पावन और भक्तिमय पर्व है। यह पर्व हमें भौतिक बन्धनों से हटाकर आध्यात्मिक जगत् में पदार्पण करने का भाग्य प्रदान करता है। हम सभी हिन्दू परिवारों से निवेदन करते हैं कि आप बड़े श्रद्धाभाव से श्रावणी महोत्सव का भव्य आयोजन अपने परिवारों और मन्दिरों में करें। बड़ी आस्थापूर्वक सपरिवार इस पर्व का महत्त्व बढ़ाने में पूरा सहयोग दें, ताकि अन्य लोग भी इसकी भव्यता से प्रभावित हों।

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि पूरा श्रावण मास यज्ञ-महायज्ञों तथा वेदों के पठन-पाठन से परिपूर्ण हो। वेदों के सत्यज्ञान से जनोद्धार होता रहे ।

आर्यसभा ने श्रावणमास को 'वेदमास' घोषित किया है। वेदाध्ययन करने का सुनहरा अवसर दिया है। अगर हमारा झुकाव वेदों की ओर होगा तो हमारे ज्ञान-चक्षु नित्य खुले रहेंगे। वास्तव में वेदालोकित होना तो मानव-कर्त्तव्य है। अपने प्रमुख कर्त्तव्य को निभाते रहिए, आप सर्वश्रेष्ठ प्राणी का प्रमाण देकर सांसारिक बन्धनों से मुक्त होंगे।

बालचन्द तानाकूर

मृत्युञ्जय

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धानादितो मुक्षीय मातुतः ।।

यजु ३/६०

इन दिनों हमारे मंदिरों में, तथा घरों पर जहाँ यज्ञ हो रहा है, यज्ञ की समाप्ति पर इस मंत्र को उच्चरीत के पश्चात् सामग्री छोड़ते हैं।जैसे 'स्तुतामया' आदि बोलकर यज्ञ को समाप्त करते हैं ।

स्वामी दयानन्द ने यज्ञ प्रकरण लिखते हुए, इस मंत्र का चयन नहीं किया है। यदि अन्त में इस मंत्र को बोलकर सामग्री डालते हैं तो भी अनुचित नहीं है।

यह यजुर्वेद के तीसरे अध्याय का साठवाँ मंत्र है। इस मंत्र के दो भाग हैं। कोई वैदिक अलम्बी भाई आधे ही बोलकर एक बार सामग्री छोड़ते हैं और दूसरी बार दूसरा भाग बोलना चाहिए।

मेरे विचार में दो बार में न बोलकर पूरे मंत्र के अन्त में सामग्री डालनी चाहिए, क्योंकि मंत्र एक है। दो भाग हैं। जो सोद्देश्यपूर्वक है । पूर्वार्ध का पूरक उत्तरार्ध है और उत्तरार्ध का पूरक पूर्वार्ध। पूर्वार्ध में मोक्ष का अभिलाषी याने मुमुक्षु की पुकार है और दूसरे भाग में एक नव वधू की हार्दिक पुकार है। दोनों भागों में एक-दो शब्दों का हेर-फेर है 'पुष्टिवर्धनम्' की जगह 'पतिवेदनम्' और माऽमृतात् के स्थान पर 'मातुतः' है। लगता है कि कोई कन्या त्र्यम्बकं - परमात्मा, आचार्य या पिता से विनती कर रही है कि मुझे पितृकुल के बन्धन से मुक्त करके पतिकुल में बाँध दें क्योंकि पतिकुल में जाने के लिए वचनबद्ध हूँ। इसी प्रकार मोक्ष चाहने वाले की भी प्रार्थना है कि मुझे मृतलोक से मुक्त करके याने जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त करके अमृत बंधन में बाँध दें ताकि मुझे नित्य आनन्द प्राप्त होता रहे।

वधू तो प्रार्थना कर रही है एक बन्धन से छूटकर दूसरे बन्धन में बन्धने की। मुमुक्षु भी प्रार्थना कर रहा है – एक से छुटकारा पाना और दूसरे में आबध होना जैसे विवाहिता एकदम से माँ-बाप, भाई-बहन उनके मुक्ति पाना नहीं चाहा फेरा डालने आती रहती है – हरदम के लिए नहीं पर कुछ दिनों केलिए। काम पूरा होने पर खुशी से ससुराल चली जाती है। इसी प्रकार मुमुक्षु भी मुक्ति का काल पूर्ण होने पर मृत्यु लोक में पुनः आता और फिर वापस चला जाता है जैसे वधू मायके छोड़कर स्वतः वापस चली जाती है।

भगवान् से जब प्रार्थना करते हैं मोक्ष प्राप्ति की, तो पूरी आयु के बाद ही प्रार्थना करते हैं। वेद में सौ साल जीने का प्रावधान है। मृत्यु या बन्धन से छूटने की पूरी अवधि समाप्त होनी चाहिए। जैसे महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपने यजुर्वेद के भाष्य में लिखा है – जैसे खर्बूजा फल लता में लगा हुआ अपने आप पक कर समय के अनुसार लता से छूट कर सुन्दर स्वादिष्ट हो जाता है वैसे ही हम लोग पूर्ण आयु को भोगकर शरीर को छोड़ के मुक्ति को प्राप्त होवें ..... इसी प्रकार जब लड़की भी विवाह करने की अवस्था में आ जाती है, माँ-बाप को भी लगता है कि अठारह उनतीस वर्ष की हो गई तो विवाह कर देते हैं।

सौ साल जीने के तीरके बताये गए हैं। सम्पूर्ण जीवन को कैसे ले जाना है? कैसे मनुष्य बनना है ? यदि मनुष्य सही ढंग से जिएगा नहीं तो मृत्यु भी स्वतः नहीं होगी। केवल कहने से आदमी की मृत्यु नहीं होती तरबूज की लता से छूटने जैसी मृत्यु ।

आर्यत्व

श्रीमती भगवन्ती घूरा

सौभाग्य से हम आर्य जगत् के छत्र-छाया में जी रहे हैं और वैदिक-ज्ञान की बहती धारा से अपने इस जीवन को सार्थक बना रहे हैं। मानव प्राणी ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है और नारी मानव प्राणी में एक अद्भुत अंग है ।

नर-नारी एक दूसरे के पूरक है, फिर भी स्वाधीनतापूर्वक हरेक का दायित्व मर्यादित और सराहनीय है। ये समय-समय पर सम्मानित भी होते हैं।

हर साल के आठ मार्च को विश्वभर में नारी दिवस की घोषणा से नारी की गरिमा को प्रतिष्ठित किया गया है, जिससे मानवता की उदारता की झलक प्रत्यक्ष दिखाई दी। समस्त नारी की ओर से आभार प्रकट है। आत्मीयता से पेश है एक प्रसंग –

आज की नारी

आर्य जगत् में आज नारी है सम्माननीय ।
शक्ति की देवी ममता और श्रद्धा की मूर्ति है नारी।
जीवन-दायिनी, सेवा भावी और सुलक्षणी से है मानी ।
तुलना होती है 'ऊँचे पर्वत गहरा सागर' से।
पर नारी तो है इस धरती पर मणि।
एक जीवन में दो कुल के कल्याणी।
बेटी बहन के रूप में बढ़ाती है मायके का मान।
वधू बहू के रूप में कला-कौशल से निखारती पति का धाम।
गृहिणी और माँ बनकर बनाती है परिवार को सुख-शान्ति-समृधि की खान।
मातृत्व है नारी की एक अभीष्ट पहचान ।
प्रथम गुरु बनकर सद्भाव से करती है जीवन निर्माण ।
आगे बढ़ती जीवन में कदम-कदम पर देती है योगदान ।
समाज और राष्ट्र निर्माण में भी उसका हाथ बँटाना है माननीय।
आज के वैज्ञानिक युग में आ पड़ी है एक बाधा।
विज्ञान और धर्म संस्कृति में है अनमोल तुलना।
नई पीढ़ी के स्थिति है डाँवाँडोल सूझ-बूझ सावधानी से लगाना है ज़ोर ।
आहार व्यवहार से प्रभावित करके लाना है जीवन में मोड़।
दुर्व्यसन करके दूर बनाना है उन्हें सज्जन ।
यह सुधार-कार्य आज नारी के प्रति भी है एक ललकार।
संभवतः नारी की सजनता और बलिहारी से सम्भव है सुधार।
अस्मिता से रहित मैत्री पूर्ण सद्गुणों से सजती रहे नारी।
दिव्यता से बनी रहे जग-जननी की आन-बान और शान।
धन्यता से होता रहे नारी का जय-जयकार!

सत्यार्थप्रकाश मास के पश्चात् वेद-मास

श्रीमती लीलामणि करीमन,एम.ए.,वाचस्पति

आर्यसभा के तत्वावधान में अखिल मॉरीशस में सत्यार्थप्रकाश का प्रचार जून के पूरे महीने में हुआ। विद्वानों ने, पंडित-पंडिताओं ने घर-घर में, गाँव-गाँव में, समाजों में रेडियो, टी.वी. एवं पत्रिकाओं के माध्यम से सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न समुल्लासों पर अपने विचार प्रकट किए और जनता ने इनसे लाभ उठाया। इस पूरे मास के प्रचार के पीछे आर्यसभा का क्या उद्देश्य है, इसपर ध्यान देना आवश्यक है। एक महीने के दौरान सत्यार्थप्रकाश का प्रचार करके जनता को इस महान् ग्रन्थ के प्रति जागरूक रहने का सन्देश छिपा हुआ है, अर्थात् यह ग्रन्थ नित्य प्रति स्वाध्याय करके उसमें छिपे विचारों को समझते हुए, उसे अपने जीवन में लागू करने का सन्देश है। ऐसा करने से हम धर्म-मार्ग को भली-भाँति समझते हुए उसपर चलने की चेष्टा करेंगे और शनैः शनैः व्यसनों व बुरे आचरणों से दूर होते जाएँगे।

आवश्यक है कि हम अपने उन बच्चों के लक्षणों की ओर ध्यान दें जो अभी विद्यार्थी हैं। सत्यार्थप्रकाश एवं अन्य मनीषियों के ग्रन्थों में विद्यार्थियों के लक्षणों पर काफ़ी कुछ लिखा गया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

विद्यार्थियों के दोष

आलस्यं मदमोहौ च चापल्यं गोष्ठिरेव च।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च।
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ।

सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा व्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम् ।।

विदुर प्रजागर (अ० ४०/श्लो० ५/६)

अर्थ – १. आलस्य व शरीर और बुद्धि में जड़ता
२. नशा, मोह, व किसी वस्तु में फँसावट (व्यसन)
३. चपलता (unsteadiness) और इधर-उधर की व्यर्थ कथा करना-सुनना
५. पढ़ते-पढ़ाते रुक जाना
६. अभिमानी होना
७. अत्यागी होना

ये विद्यार्थियों के उपर्युक्त सात दोष होते हैं।

जो विद्यार्थी ऐसे हैं, उनको विद्या कभी नहीं आती है। सुख भोगने की इच्छा करनेवाले को विद्या कहाँ और विद्या पढ़नेवाले को सुख कहाँ? विषय सुखार्थी (जिसको विषयों का सुख चाहिए)वह विद्या छोड़ दे और जिसको विद्या चाहिए – वह विद्यार्थी विषय सुख को छोड़ दे। क्योंकि ऐसे किये बिना विद्या कभी नहीं हो सकती। विद्या उसे प्राप्त होती है जो –

सत्ये रतानां सततं दान्तानामूर्ध्वरेतसाम् ।
ब्रह्मचर्य दहेद्राज्यन् सर्वपापान्युपासितम् ।।

अर्थात् – जो सदाचार में प्रवृत्त, जितेन्दिय, जिसका वीर्य अधस्खलित कभी न हो, उन्हीं का ब्रह्मचर्य सच्चा और वे ही विद्वान् होते हैं।

अब प्रश्न उठता है – क्या आज के विद्यार्थी ऐसे हैं? इस प्रश्न का हमें नकारात्मक उत्तर ही मिलेगा। कारण कि आज की पीढ़ी में, उसकी सोच में उसकी मान्यताओं में अन्तर आ गया है। उन्हें ठोस मूल धर्म-ग्रन्थों के स्थान पर – गूगल पर, You-tube आदि पर दर्शाये-धर्म की बातों पर अधिक विश्वास है। परन्तु इन्टर्नेट के माध्यम से कितनी गलत बातें, गलत धारणाएँ प्रसारित की जा रही हैं। हमारे बच्चे उन्हीं पर विश्वास करके गुमराह हो रहे हैं ।

स्वामी जी महाराज ने विद्यार्थी के विषय को इतना विस्तारपूर्वक समझाया है कि कोई भी साधारण मनुष्य इन बातों को सुन-पढ़कर आसानी से समझ सकता है। संस्कार-विधि व सत्यार्थप्रकाश में विद्यार्थी के पठन-पाठन के साथ माता-पिता एवं आचार्य के गुणों को भी जोड़ दिया है – **'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।'** इसके अतिरिक्त पठन-पाठन के लिए अनुकूल वातावरण का भी वर्णन किया गया है, जिससे कि सब ब्रह्मचारी विद्यालय से निकले तो वह एक पूर्ण विद्वान्, चरित्रवान्, गुणवान्, मतिमान्, बुद्धिमान्, श्रीमान् के रूप में जनता के सामने आए। ४८ वर्ष के ब्रह्मचारी को तो उन्होंने 'आदित्य ब्रह्मचारी' की संज्ञा दी है, अर्थात् उस ब्रह्मचारी का चेहरा सूर्य के समान दीप्यमान् होता है। परन्तु आधुनिक युग की पढ़ाई नवोद्योगीकरण के उपकरणों पर आधारित है। आजकल अपरा विद्या पर ही अधिक बल दिया जाता है। हमारे ब्रह्मचारी परा विद्या से परे रहकर ही गलत राहों पर अग्रसर हो जाते हैं, जिसका नतीजा भी गलत ही होता है। परा विद्या का ज्ञान न होने के कारण ही आज की युवा-पीढ़ी अनुशासन से दूर व्यभिचार का शिकार हो रही है। हमें अपने बच्चों को बचाना है। उन्हें पुनः धर्म की ओर वापस लाना है। यह काम पहले माता-पिता का है। बचपन से ही बच्चे का सही निर्माण करना, उसे सही दिशा की ओर अग्रसर करना माता-पिता का परम धर्म है।

आज यदि बच्चे बहक रहे हैं तो इसका एक और कारण है शिक्षा-प्रणाली में अन्तर। विद्यार्थियों की गलतियाँ सुधारने के तरीके उपयुक्त न हों तो विद्यार्थी भविष्य में भी गलतियाँ करते रहेंगे, और ये ही गलतियाँ आगे चलकर अपराध का रूप ले लेती हैं।

OM

SAVANNE ARYA ZILA PARISHAD

PROGRAMME FOR SHRAVANI MAHOTSAV 2017

DATE	TIME	VENUE
16/07	9.00 a.m	Souillac Arya Bhawan, A.M.S
16/07	4.00 p.m	La Flora Mahila Samaj
17/07	3.30 p.m	F. Babooram Ash., C.Grenier
18/07	2.00 p.m	Bois Cheri Arya Samaj
19/07	9.00 a.m	Souillac Arya Bhawan
20/07	4.00 p.m	Surinam Arya Samaj
21/07	4.00 p.m	Ilot Camp Diable A. Samaj
22/07	9.00 a.m	Souillac Gurukul
23/07	8.00 a.m	Camp Rabeau Arya Samaj
23/07	8.00 a.m	Bois Cheri Arya Samaj
24/07	4.00 p.m	Tyack Arya Samaj
25/07	3.30 p.m	Chem. Grenier Pta. P. Mungroo
26/07	9.00 a.m	Souillac Arya Bhawan
27/07	4.00 p.m	Chemin Grenier A.S.
28/07	5.00 p.m	Chateau Benares A.S.
29/07	9.00 a.m	Souillac Gurukul
30/07	3.30 p.m	Shri Rajen Ramjee's Residence
30/07	9.00 a.m	PruD'homme AS/AMS
30/07	9.00 a.m	Britannia Arya Samaj
1/08	"	"
2/08	9.00 a.m	Souillac Arya Bhawan
3/08	3.30 p.m	F. Babooram Ashram
4/08	5.00 p.m	Bhagwandass Boolaky's Residence
5/08	9.00 a.m	Souillac Arya Bhawan
6/08	9.00 a.m	Shri Shekar Gaoneadree
6/08	8.00 a.m	Tyack Arya Samaj
7/08	4.30 p.m	Riv. du Poste Ach. V. Oomah
8/08	4.00 p.m	Grand Bois Arya Samaj
9/08	9.00 a.m	Souillac Arya Bhawan
10/08	3.00 p.m	Comlonne Arya Samaj
11/08	4.00 p.m	Chateau Benares Arya Samaj
12/08	3.30 p.m	Souillac Arya Bhawan
13/08	3.30 p.m	Chamouny Arya Mandir
		PURNAHUTI Chamouny Arya Samaj

R. Ramjee *President* B. Boolaky *Secretary* B. Bhowan *Treasurer*

गतांक से आगे

घोर घने जंगल में

विश्वदेव मुनि, वानप्रस्थी

इन बातों से उसको कुछ लगा और वह सुधर गया और उसके जीवन ने करवट बदली। एक स्तुति गाया करता था–

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया,
वाणी से जाये वह क्यों कर बताया ।।
नहीं है वह यह रस जिसे रसना चाखे,
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।।
तुम्हारी कृपा .....
संख्या में आना असम्भव है उसका,
दिशा काल में भी रहे ना समाया ।
तुम्हारी कृपा .....
तुझसा न दाता है तुझ-सा न दानी,
इतना बड़ा दान जिसने दिलाया।
तुम्हारी कृपा ....
आत्मोन्नति में तुम्हारी दया से,
मेरी जिन्दगी ने अजब पल्टा खाया ।।
तुम्हारी कृपा .....
सत्-चित्-आनंद अनंत स्वरूप,
मुझे मेरे अनुभव से निश्चय कराया ।।
तुम्हारी कृपा ...
गूँगे की रसनाके सदृश्य 'अमीचन्द',
कैसे बताऊँ कि क्या रस उड़ाया ।।
तुम्हारी कृपा .....

यही था स्वामी दयानन्द जी का उद्देश्य – गिरे हुए को उठाना । मूर्दों में जान डालना । यही थी उनकी जादूगरी, उनका चमत्कार।

भारत मूल के लोगों ने इस देश में मॉरीशस की धरती से पत्थरों को अलग करके मिट्टी से सोना उगलाया और आज १२५ सालों के अन्दर ही फल स्वरूप हम फूले-फले हैं। कौन कह सकता है कि पत्थर औंघड़ाने से सोना नहीं मिलता है? निकलता है, कोई अतिश्योक्ति नहीं ! पुरुषार्थ से, तपस्या से, गोरों के अत्याचारों से कोड़े की मार से वे जंगल पहाड़ों पर नहीं भागे।

हमारे पूर्वजों की नसों में आर्यत्व का रक्त दौड़ रहा था, और उनके तप से उनके अन्दर सोये हुए गुण जागे।

भू-यज्ञ एक महायज्ञ है। हमने सिद्ध करके दिखा दिया और इस संस्कार से हम स्वयं सोने जैसे चमक रहे हैं, दुनिया के कोने-कोने में हमारे विद्वान् अपना योगदान दे रहे हैं, मॉरीशस का नाम रोशन कर रहे हैं, स्व० सर शिवसागर रामगुलाम एक नमूना हैं, जो आज भी हमारे देश को दुनिया में सुशोभित कर रहे हैं। उन्होंने आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द की निःशूल्क-शिक्षा के सिद्धान्त को अपनाया, और देश को प्रगति के रास्ते पर धर के देश का मार्ग-दर्शन किया।

पाश्चात्य-संस्कृति एक प्रेरणा-स्रोत बन गयी है। इस समय Science and Technology का श्रेय पश्चिमी देशों को जाता है। क्यों? इसलिए कि उनकी नसों में भी वैदिक ईश्वरीय विद्या का रक्त ही दौड़ रहा है। प्रमाण? उस वैदिक मंत्र को पढ़ेंगे तो बात समझ में आ जायेगा ।

परोक्षप्रियाः इव हि देवाः

अर्थात् – ज्ञानी लोग सदैव अज्ञात पदार्थों की जिज्ञासा में रुचि रखते हैं । प्रगति का मूल सिद्धान्त यही है – from known to unknown। आपको 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' पढ़ने से पता लगेगा कि महिधरों ने कितना भारत को डुबाया है, लेकिन धीरे-धीरे भारत जाग रहा है, लेकिन Western Science और शिक्षा पद्धति की नकल करके। एक समय था, जब भारत संसार का गुरु कहलाता था। लेकिन जब तक वैदिक धर्म का पूरा सिद्धान्त – भौतिक और अध्यात्मिक विद्या को साथ-साथ नहीं चलायेंगे, तब तक दुनिया में जो अशान्ति है, वह दूर नहीं होगी।

जब तक भारती Diaspora वेद की ऋषि परम्परा तथा सिद्धान्त को नहीं अपनायेंगे, तब तक **कृण्वन्तोविश्वमार्यम्** एक खोखला नारा बनकर रह जायेगा और अमीचन्द गड्ढे में ही पड़े मर जाएगा ।

इतिहास की बात से एक उदाहरण लेते हैं : (मैंने भी इतिहास पढ़ा है।) ईसाई मत को लेते हैं – दो मध्यकालिन मुख्य साम्राज्यवादी देश ले लें – इंग्लेंड और फ्रांस – अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए एक हाथ में हथियार और दूसरे में बाइबिल लेकर चले थे। अब भूगोल का एक मानचित्र लीजिये और देखिये कि किस देश में ईसाई धर्म (मत) की मज़बूत स्थापना नहीं है ।

अफ्रिका-हमारे पड़ोसी महाद्वीप को ले लें – वह एक असुरी देश था, नंगेपन तथा नरभक्ष्य, खून पीने वाले, पिछले २००-३०० वर्ष के अंदर में वहाँ के कितने धार्मिक तथा राजनैतिक नेता संसार में विख्यात हुए, आप अपना लिस्ट बना लीजिए।

आर्यसमाज के आश्रम-व्यवस्था को अपनाकर ही भूगोल में भूडोल मचाने से ही हम विश्व को आर्य बना सकेंगे।

जब तक हम संकुचित नीति अपनाते रहेंगे तब तक हम कुएँ में मेढकों की तरह टें-टें करते रहेंगे, और ऋषि दयानन्द के उद्देश्य एक दूर का सपना ही बनकर रह जायेगा।

भूगोल में भूडोल मचाने की आवश्यकता है !

मन्त्रों का आविष्कार क्यों और किन लोगों की ज़रुरत है ? – शीघ्र आने-जाने की और वैश्यों केलिए और सेनाओं के लिए भी । कब और किन्होंने इन विचारों तथा विद्याओं का नाश किया? – आपस में वैमनस और स्वार्थ के युद्ध 'महाभारत' के बाद जब श्रेष्ठ विद्वानों, ऋषियों, गुरुओं का वध हुआ, तब फाल्तू ब्राह्मणों का राज्य हुआ तो देश की सीमा को लाँघने के दण्ड में उसे अछूत मानने लगे और उसको तिरस्कृत तथा बहिष्कृत करने लगे, तबसे भारत सिकुड़ने लगा था।

नोट : पाठकों से अनुरोध है, आप 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' पढ़ें और देखें –

१. 'इस महागम्भीर शिल्पविद्या (high technology) को सब साधारण लोग नहीं जान सकते, किन्तु जो महाविद्वान् हस्त क्रिया में चतुर और पुरुषार्थी लोग हैं, वे ही सिद्ध कर सकते हैं ।' पृ० २१७

२. 'मन के वेग से वायुयान' (supersonic) पृ० २१२। ऋषि जी के समय में पाश्च्यात्य वैज्ञानिक ने सोचा भी नहीं था।

३. अश्वि - इस का अर्थ है – तेज - horse power, जिसके ज्ञान से शीघ्रता से आने-जाने के लिए यन्त्र का आविष्कार, पृ० २०९, समुद्र, भूमि और अन्तरिक्ष (sea, land and air routes) में शीघ्र चलने के लिए यानविद्या लिखते हैं, जैसे कि वेदों में लिखा है।

४. तार विद्या – electricity telecommunications पृ० २१८, 'निरुक्त तथा सांख्य दर्शन के प्रमाण से विद्युत अर्थात् बिजली का प्रयोग', और 'स्पृधाम् - अर्थात् लड़ाई करने वाले जो राजपुरुष हैं, उनके लिये यह तार विद्या - (telecoms) अत्यन्त हितकारी है।' और व्यापारियों के लिए भी। ५. 'अभिद्युम् - विद्युत् प्रकाश से युक्त जिसका दुःसह (असह्य) प्रकाश (c/o electric shock) और उल्लंघन करना अशक्य (impossible) है।' पृ० २१० (c/o electrified fencing) लक्ष्मण रेखा को संकेत ।

सत्य तो यही है कि ईश्वर का ज्ञान तीनों काल में एक-सा रहता है, बदलता नहीं। ईश्वर सर्वज्ञ है और उनका ज्ञान भी सर्वदेशीय है एकदेशीय नहीं, नहीं तो उनपर पक्षपात का आरोप लगता। हम अल्पज्ञों के लिए पुरुषार्थ हेतु उन्होंने ऋषियों को जन्म दिया और उनके मन में वेद-ज्ञान फूँका। इस समय वेदों में दिया हुआ ज्ञान-मन्त्र (formulae) आरम्भ में भविष्य वाणी (future facts) के रूप में दिया था, आज साकार (facts) हमारे सामने है, और आगे भी साक्षात्कार होगा क्योंकि ज्ञान जीवित (dynamic) है।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

इज़्ज़तदारों का घर

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

बेटे रोहन को उसकी माँ का मेक अप करके घर से बाहर प्रायः निकलते रहना पसन्द नहीं। कॉलिज में रोहन ने बातचीत के दौरान दोस्तों से यह सुन रखा था कि जो देवियाँ श्रृंगार करके हमेशा निकलती रहती हैं, वे अच्छी नहीं होतीं। रोहन को अपनी माँ पर विश्वास है, पर उसे श्रृंगार करके बाहर जाने से रोक नहीं सकता है। उसकी माँ समाज सेवी है। वह उसे अपनी माँ मानता है, पर इज़्ज़त कर नहीं पाता है। वह खिन्न रहता है।

बाप को पता है कि रोहन की माँ समाज सेवी होने से घर की इज़्ज़त बनाए रखती है। बाप चुपचाप अपनी पत्नी का साथ देता है। वह पेंश्यन ओफ़िस के क्लर्क है। कभी रोहन की माँ घर लौटने में देर करती है, तब बाप काम के बाद माँ को अपनी मोटर से लाने चला जाता है। माँ के प्रति बाप की चुप्पी रोहन को अच्छी लगती नहीं। बाप को तो उसकी पत्नी अच्छी लगती है। उसपर उसे पूर्ण विश्वास और गर्व भी है।

रोहन यूनिवर्सिटी जाता है। किसी लड़की से उसकी आँखें चार हो गईं । अपनी सोच के अनुसार रोहन ने अपने घर का हाल लड़की को सुनाया। लड़की ने उसे वचन दिया कि जब शादी करके वह उसके घर आएगी, तब वह सुधार करने में हाथ बटाएगी। रंजना भी एक अच्छे घर की लड़की थी। उसकी माँ भी पहनना-ओढ़ना खूब पसन्द करती है। वह केवल समाज सेवी नहीं है वह अध्यापिका भी है।

रोहन पढ़ाई के बाद कॉलिज का अध्यापक बना। ऐसे तो वह बड़ा समझदार लड़का है। एक दिन कैंपिंग पर गया था। कैंपिंग के दो महीने बाद उसे पता चला कि रंजना उसके बच्चे की माँ बनने वाली है, दोनों इज़्ज़तदार परिवार के थे। बिना ढोल पीटे झट मँगनी पट विवाह हो गया। विवाह के पाँच महीने बाद रंजना एक खूबसूरत कन्या की माँ बनी ।

माँ बनने के दो सप्ताह बाद रंजना को भी एक नौकरी हाथ लग गयी। परिवार ने उस कन्या का नाम कीर्ति रखा। समाज सेवी होने से पोती को देखने का समय दादी के पास नहीं है। रंजना काम करती है। उसे भी समय नहीं । रोहन काम से छह-सात बजे आता है। बाप को रिटायमेंट लेने में अभी तीन चार वर्षों का फ़ासला है। कीर्ति को नानी के घर भेजा गया । नारी रिटायर्ड हो गई थी। रंजना भी वहीं चली गई । रोहन थोड़े दिन बाद घर-पोस बन गया। पंडिता बिद्वन्ती देवी सेविका है। गणपति जी पेंश्यन ओफिसर हैं। रोहन कॉलिज के अध्यापक हैं, और रंजना एक कम्पनी में आकाउनटेंट है। उस घर की बच्ची नानी के घर है। कीर्ति के कारण रंजना और रोहन कीर्ति के ननियोरे में रहने आ गए । नानी बीमार रहने लगी तो एक नौकरानी की ज़िम्मेवारी में कीर्ति पलने लगी ।

बेटे के घर से चले जाने पर पंडिता जी खिन्न हैं। कीर्ति के चले जाने से दादा को अच्छा नहीं लगता। सास की बीमारी से रोहन तंग है। काम से फ़ुर्सत न मिलने पर अपनी बच्ची को नौकरानी के हवाले छोड़ने से रंजना को अच्छा नहीं लगा । सभी के सभी उलझनों में ही जी रहे हैं। न काम का दुख है, न पैसों का, न घर का दुख है, न नौकर का, न मोटर का दुख है, न इज़्ज़त का दुख है, तो बस समय का दुख है। किसी के पास समय है ही नहीं। सभी के सभी के पछतावे कुढ़ते दिन काटते जीते जा रहे हैं ।

उस घर में कोई किसी को उपयुक्त नहीं मानता। रोहन कहता है कि मुझे माँ के कारण घर छोड़ना पड़ा। रंजना कहती है क्या समझ कर मैं यहाँ ब्याही गई । यदि कीर्ति न रह जाती तो यह नौबत ही नहीं आती। कीर्ति की नानी अपने बुढ़ापे से तंग है, कारण उसका पति चल बसा है। गणपति पोती को हर समय अपने पास न पाकर निराश है, कारण वही तो उनके खानदान का धन है। माँ कहती है कि रोहन अपनी पसन्द की पत्नी लाकर सारी मुसीबत की बला ला चुका, जिसको मैंने उसके लिए चुना था, उसके नाम तक लेने का अवसर नहीं दिया गया।

यह है एक इज़्ज़तदार सुधरे घर की दशा। अब प्रश्न आता है कि इस सुधरे घर को किस छोटी सी बात से सब ठीक हो सकता है। तब कहा जाता है, जब तक वे एक-दूसरे की मजबूरियों को समझने का प्रयत्न नहीं करेंगे और एक-दूसरे के जीवन-यापन की विशेषता को अपनी दृष्टि से अर्थ लगाना बन्द नहीं करेंगे। कारण हरेक का अर्थ उनके स्वार्थ के साथ जुड़कर किसी दूसरे सदस्य का अंकन करते हैं। ऐसे घर में सभी अच्छे हैं। सभी-एक-दूसरे को जीने देवे, हरेक के जीने के ढंग इज़्ज़त करें, तब तक जैसे हैं वैसे ही वे इज़्ज़तदार बने हैं। बल्कि सभी को घर में या बाहर में अपनी-अपनी इज़्ज़त का ख़्याल है। यदि मज़े से भूल का ध्यान हो तो रोहन कहीं चुक गया था। उसको भी समय पर सम्भाला जा सकता।

SHRAVANI 2017

1.0 LE MOIS DE SHRAVAN

Ce 5ème mois du calendrier Védique est dédié à l'étude des Védas. Le mot '*Shrāvan*' est dérivé du mot 'shravana' qui signifie l'écoute. L'apprentissage commence par l'écoute et implique nos sens de perception et ainsi acquérir des connaissances : le gouter ; l'odorat ; la vue; l'ouïe ; et le toucher.

2.0 La lecture des Védas : l'évolution des savoirs

Le mot Véda est dérivé du mot 'vid' signifie connaissance. Le mois de Shrāvan est dédié à l'avancement spirituel ou moral de l'être humain. L'étude des Védas nous permet de nous connecter à ce réservoir de connaissances.

De nos temps dites modernes, l'agriculture a évolué mais fait actuellement marche arrière vers l'agriculture bio. Les chevaux sont la puissance des moteurs (*horsepower*).

Les Védas traitent des différents sujets, entre autres les sciences sociales, la bonne gouvernance, l'éthique, la philosophie, la méditation, l'économie, les mathématiques, l'économie, le transport (engins terrestres, marines, espaces, etc.), la communication, la médecine, chimie, physique et divers sujets scientifiques, l'environnement, la météorologie, la musique, et la méthodologie de l'apprentissage et d'étudier. *Ces savoirs sont dans la forme des graines dont on doit cultiver et prendre soin afin qu'elles deviennent des arbres porteurs de fruits.*

2.1 Les valeurs universelles des Védas : Dharma ou la vertu / l'éthique

Les valeurs Védiques sont universelles, laïques – ne s'accrochent point au culte. Elles nous poussent vers la spiritualité afin que nous puissions vivre la réalité spirituelle à tout temps. En conséquence nous (i) traiterons que sur le chemin de la vertu, la moralité et la droiture ; (ii) multiplierons les richesses matérielles et spirituelles ; (iii) en servirons de ces richesses pour notre bien-être et le bien-être de tous ; et la vertu en mode de 24/7 nous mènera vers le but final, le salut ou la libération du cycle de la naissance et de la mort.

2.2 Le manuel reçu de Dieu

Les Védas sont la source de toutes les connaissances mondaines et spirituelles transmises à l'homme par Dieu. Les connaissances Védiques ont étés transmises de bouche à oreille, pendant des millénaires, d'où le nom de '*shruti*'. Les Védas constituent le manuel afin que l'homme se transforme en être humain en se servant des ces connaissances pour gérer sa vie, sa façon de faire et sa façon d'agir tout comme le livret d'instruction reçu à l'achat d'un équipement.

2.3 Les Védas - Patrimoine Culturel de l'humanité

Les Védas appartiennent au monde, pas que pour les membres de l'Arya Samaj ou les Hindous. Les valeurs universelles que nous enseignent les Védas, la seule et unique Révélation, permet à l'homme de vivre en paix car l'harmonie règnera entre ses pensées, ses paroles et ses actions. Le RigVéda est reconnu comme le plus ancien texte de l'humanité. La tradition du chant Védique a été inscrite en 2008 sur la liste représentative du 'Patrimoine Culturel Immatériel de l'humanité. Le RigVéda est aussi connu comme le plus ancien texte sur terre, d'où le nom « écriture supra-sainte ».

2.4 Le perfectionnement de l'être humain

Celui qui pratique les enseignements Védiques développera une personnalité qui fera de lui un modèle, ainsi en l'imitant la famille, la société, la nation et le monde s'améliorera de soi. L'homme est la plus infime entité de notre société, la race humaine.

2.5 La mondialisation

Nous réussirons le concept de la globalisation (*vasudaiva kutumbakam*) non pas en se limitant au commerce ou à la chose économique …mais en termes de convergence de caractères, d'actions et de tempéraments où l'homme vivra les concepts de 'tous pour un et un pour tous' (*mitrasya chakshushā samikshāmahe*).

2.6 La pensée – le déclic de bonnes œuvres

Le Gāyatri Mantra, aussi appelé *Guru mantra* nous indique la voie. Nous demandons à Dieu de nous inspirer pour que nous puissions engager notre intelligence vers de bonnes pensées et de bonnes actions. Rappelons que nos paroles et nos actions découlent de nos pensées. Ainsi le besoin de se mettre en silence et méditer pour capter ce que nous dit la voix intérieure.

3.0 SHRAVANI & YAJNA

Le Yajna (havan ou oblations au feu) est prescrit comme une opération scientifique pour le bien-être de l'humanité et du monde. Le procédé consiste de la récitation des versets des Védas, à offrir le ghee (beurre clarifié), du sāmagri (des herbes médicinales, odoriférantes, etc.) au feu.

3.1 Yajna - les procédées scientifiques

La combustion d'une partie des offrandes (samidhā, ghee, sāmagri) produit de l'énergie qui permettra l'évaporation (transformer de liquide à la vapeur) et à la sublimation (transformer de l'état solide à la vapeur). Le ghee et le sāmagri contiennent des huiles et autres essences à promouvoir un environnement sain pour toutes les formes de vie sur notre planète.

3.2 Yajna - les bénéfices

Un piment dans le feu provoque l'éternuement parmi les gens sur une grande surface, il ne reste qu'à penser aux bénéfices du Yajna sur cette même échelle. Ceux-ci se résument comme suit :

➢ La récitation des versets des Védas au cours du Yajna tranquillise nos pensées et émotions ……**la sono thérapie**.

➢ Les huiles et essences dispersées dans l'atmosphère sont repris dans notre système sanguin à travers nos poumons … **l'arôma thérapie**.

➢ Le feu nous expose à plusieurs couleurs de lumière …**la chroma thérapie**.

➢ La respiration longue et profonde au cours de la récitation des versets constitue …**les exercices respiratoires**.

➢ Les vapeurs dégageant du Yajna se mélangent à la vapeur de l'eau dans l'air et remontent dans les nuages. La pluie qui s'en suit est bénéfique à tous sur terre ...**l'ensemencement des nuages ou le *cloud seeding***.

➢ Les vapeurs ont aussi l'effet de purifier l'air autour de nous en repoussant les virus, moustiques et autres, ainsi nous protège des maladies …**la fumigation**.

L'appel en ce mois de Shrāvan

C'est un appel à tous de bénéficier des différents programmes à travers les Arya Samajs de l'île et au sein des familles. Que le Shrāvani Mahotsav …augure une nouvelle ère dans notre vie …nous sert d'occasion à acquérir les vraies connaissances (*shuddha jnaana*) …nous mène vers de bonnes pensées, paroles et pratiques / actions (*shuddha karma*) …nous amène vers la méditation sur le vrai sujet (*shuddha upaasnaa*) …nous conduise aux valeurs universelles, énoncées dans les Védas ; …nous transforme en être humain …nous donne la maîtrise à nous positionner comme les agents du changement pour une meilleure société, juste et équitable …en bref progresser vers le développement holistique et un environnement sain.

***Yogi* Bramdeo Mokoonlall**

Nature, (Not Drugs) Cures

Sookraj Bissessur, B.A., Hons

"Kāma or true enjoyments are those which are the combined fruits of uprightness of principles and of honest acquired wealth."

Swami Dayanand Saraswati

"It is a poor state of mind whose science, philosophy and religion are not harmonious with one another."

Dr A. Rabagliati

Vedic Dharma has stood this test. It has ever been a loving brother to science. The Bhagvad Gita , (Chapter 15, Shloka I) says : "The phenomenal world is a Peepal tree, with its roots above in God, and its branches below." Knowledge, skill and life come by His grace. He gives us power to work, but the fruits thereof are in His power, to give according to the laws of Nature. These eternal law originate from God. Our modern drug system considers life as just a transitory, ephemeral and erratic product of food combustion. It denies Nature and God. "We have transferred our religion from God to Medical Counsel", observed – George Bernard Shaw. If food is life, why should the rich ever breathe their last or die?

"Food is the universal medicine, because the creatures came into existence out of food which preceded them in the order of creation" (Upanishads). "Let thy food be thy medicine, thy medicine be thy food – (Hippocrates, the father of modern medicine). The Vedic texts further state : – "Food is death giving, as well as life – sustaining." Food taken according to the rules of natural hygiene is a saviour and promoter of health, otherwise it is a destroyer.

We must know what, when and how much to eat. What is not food should never be taken as medicine. Wrong combinations such as mixing proteins with carbohydrates (rice with rajmah) and carbohydrates with sour acidic foods should be avoided. Coffee, tea, tobacco and wine are irritants (miscalled stimulants). They flog the tired system when the latter actually needs rest. At times doctors recommend too much intake of proteins. One third of our food is the actual need of the person. In fact, there is no roof to suggest greater amounts of proteins for athletes and labourers. Moreover work (mental and physical) and digestion will go together. Dharma is the food for soul and prayer without prayerful living is mere pretension.

Rightly goes on a sharp and retentive adage : "When wealth is lost nothing is lost – when health is lost something is lost, when character is lost everything is lost."

..... *suite du page 1*

Avidyā

La science ou la connaissance (jnāna) de la création, du fonctionnement et de la dissolution de l'univers, de toutes les forces de la nature, de toutes les choses inertes (sans vie), aussi bien que de toute forme de vie intelligente qui s'y trouve et de toutes les activités de l'homme sur la terre pour gagner sa vie, est désignée dans ce verset par le mot Avidyā qui est aussi connu comme 'bhautika Vidyā', 'Aparā Vidyā', 'jnāna' ou la connaissance du monde matériel / le matérialisme.

Cette connaissance (Avidyā) est indispensable à l'homme pour qu'il puisse gagner sa vie. Il doit l'acquérir à tout prix.

Selon le grand sage Manu, 'Avidyā' veut aussi dire les bonnes actions (karma), le sacrifice et l'accomplissement de ses devoirs avec dévouement et désintéressement (tapa, tyāga) envers sa famille, la société et le pays.

Mais avant de passer à l'action (karma) on doit acquérir la connaissance (jnāna) qui est un atout essentiel dans ce processus. En ce faisant nous nous débarrassons de tous les mauvais penchants et nous purifions notre âme.

En conséquence nous atteignons 'sattva guna'. Ainsi nous pourrons affronter la mort en toute sérénité.

Le matérialisme ('Avidyā) n'est pas le vrai progrès de l'humanité

Les pays occidentaux se sont lancés pleinement dans les activités du monde matériel telles que la science, la technologie, la médecine, l'industrie, l'informatique, le commerce, le génie, les affaires et autres activités professionnelles. Ils ont accomplis d'énormes progrès dans tous ces domaines pour rendre la vie humaine facile. En conséquence ils ont connu une ère de prospérité sans précédent et ont acquis une richesse considérable. Ils ont pu apporter tous les conforts dans le monde par leurs mille inventions et découvertes, et ils mènent un train de vie luxueux. Fort de leur progrès dans la science ils ont entrepris des voyages interplanétaires avec succès. Ils ont pu atteindre la lune et les autres planètes et ont même foulé le sol lunaire à plusieurs reprises. Tout ceci est à l'honneur de l'humanité.

Cependant le trop de confort, de richesse, d'autres facilités, des distractions et du luxe, nous pousse à rejeter la spiritualité et à se concentrer qu'à la vie mondaine (mode, esthétique, divertissement, et les excès du matérialisme). En conséquence on tombe dans l'immoralité et ceci mène l'humanité vers la décadence.

De nos jours la moralité, l'honnêteté, l'intégrité, la spiritualité, le bons sens, les valeurs humaines, le patriotisme et autres valeurs sont à la baisse à tous les niveaux dans le monde.

Il y a beaucoup de gens qui sont tombés dans la bassesse. La fraude, la corruption, la malhonnêteté, les passe-droits, le népotisme, l'escroquerie, l'enlèvement, le hold-up, l'arrogance, le chantage, le harcèlement, les crimes, les viols, le trafic de drogue, le terrorisme, le cyber-crime, et autres fléaux fragilisent le tissu social. Cette situation malsaine engendre d'autres problèmes tel que l'augmentation de l'extrême pauvreté, le chômage, la délinquance juvénile, le suicide, l'alcoolisme, la prostitution, du trafic et consommation de la drogue, malgré tous le progrès sur le plan matériel. Le matérialisme comme la seule voie du progrès éloigne l'homme du salut.

Le but ultime de la vie

La seule option pour que l'homme puisse atteindre le but ultime de sa vie (le bonheur éternel / la libération de son âme du cycle de la vie et de la mort / 'moksha') est la pratique non seulement de 'Vidyā' ou de 'Avidyā', mais des deux, car ensemble ils réunissent toutes les conditions essentielles : 'Jnāna', 'karma' et 'upāsnā'.

'Jnāna' (la connaissance) et 'karma' (les bonnes actions) émanent de 'Avidya' du monde matériel, et 'upāsnā' (la dévotion à Dieu, les prières, la méditation, le yoga) provient de Vidyā et aident l'âme (ātma) à s'élever au-dessus de 'sattva guna' (les qualités excellentes de l'homme). Subséquemment le Seigneur nous gratifiera de médhā (l'intelligence supérieure) qui nous guide à assumer le corps 'turiya' (corps subtil). Ainsi l'âme reste absorbée par la contemplation de l'Esprit Suprême et bienheureux (Dieu) dans l'état de 'Samādhi' (condition supérieure de l'âme pendant la méditation) afin d'atteindre le but ultime – 'Moksha' (la libération du cycle de la vie et de la mort).